# Please Visit TBRC.org to download the scan of the whole volume

#### Surrogate LC Cataloging Record

Rgya chen bka' mdzod: the expanded edition of the writings of 'jam mgon ...

LC Control Number: None

Type of Material: Book (Print, Microform, Electronic, etc.)
Personal Name: Kon-sprul Blo-gros-mtha'-yas, 1813-1899.

Main Title: Rgya chen bka' mdzod: the expanded edition of the writings of

'jam mgon kon sprul blo gros mtha' yas

**Uniform Title:** [Works]

Published/Created: New Delhi: Shechen, 2002.

Description: 13 v.

Notes: Text in Tibetan

Subjects: Buddhism--China--Tibet.

LC Classification: BQ7564 +

**Dewey Class No.:** 

Geog. Area Code: a-cc-ti

CALL NUMBER: BQ7564+

**TBRC Scanning Information** 

Scanned by M/s Satluj Siti Enterprises, 63-F Sujan Singh Park, New Delhi, India, for the Tibetan Buddhist Resource Center, 115 5<sup>th</sup> Ave. 7<sup>th</sup> Floor, New York, NY 10003 USA 2003

ORIGINALLY PRINTED BY SHECHEN MONASTERY WITH THE SUPPORT OF TSADRA FOUNDATION



Shechen Publications

2002

THE EXPANDED EDITION OF THE WRITINGS OF 'JAM MGON KONG SPRUL

BLO GROS MTHA' YAS

VOLUME 2

Blank Page As Per Original Document

### RGYA CHEN BKA' MDZOD

The expanded edition of the writings of 'jam mgon kong sprul blo gros mtha' yas (1813-1899).

New Delhi 2002

Reproduced from a set of prints the dpal spungs xylographs from eastern Tibet

VOLUME 2

## Shechen Publications

Founded by H.H. Dilgo Khyentse Rinpoche

(Under: SRPC Trust, Bodhgaya, Bihar, India)

EA-12, iind Floor, Inder Puri, New Delhi-110 012 (India) Tel.: 583 4230 Fax.: (+91 11) 583 4238 E-mail.: shechen@del3.vsnl.net.in

Shechen Maha Buddha Vihara, P.O. Box 136 Kathmandu, Nepal. Tel/Fax (977 1) 470 215

Printed at Jayeed Press, Ballimaran, Delhi.

ISBN 81-7472-073-1 (Set.)

Copyright year 2002, Shechen Publications

This publication has been supported by a grant from the Tsadra Foundation

ISBN 81-7472-075-8 (Vol.2)

#### PREFACE

Lodrö Thave.

Jamgön Kongtrul Lodrö Thaye ('jam mgon kong sprul blo gros mtha' yas, 1813-1899) along with Jamyang Khyentse Wangpo, Patrul Rinpoche, Lama Mipham, and other 19th century luminaries have eloquently shown how the various teachings of the nine vehicles of Tibetan Buddhism form one coherent, non-contradictory whole. These great masters inspired the nonsectarian movement that flourished in the nineteenth century. Gathering teachings from all areas of Tibet and from all spiritual traditions, these teachers -- themselves authentic spiritual masters, scholars, poets, commentators, and accomplished yogins -- saved the heritage of Tibetan Buddhism from decline and restored its vitality, a heritage that is still benefiting us today. So that they could be practiced and transmitted to future generations, the essential teachings were compiled into major collections, such as The Five Great Treasuries (mdzod chen po lnga) which were collected and edited by lamgön Kongtrul

Out of the five treasuries, the rgya chen bka' mdzod comprises the writings of Jamgön Kongtrul that are not included in the other four. It contains devotional praises and prayers (bstod tshogs gsol 'debs), guru yogas, sadhanas (sgrub thabs), rituals (cho ga), manuals for bestowing empowerments (dbang khrigs), pieces of spiritual

advice (zhal gdams), songs of realization (gsung mgur), inventories and list of topics (dkar chag), explanations of meditation practices (khrid yig), and biographies

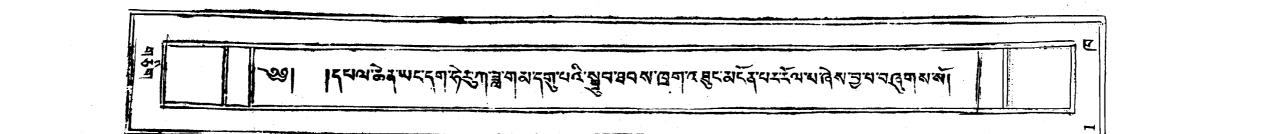
(rnam thar). An earlier edition of this collection was published under the inspiration of Dilgo Khyentse Rinpoche (dil mgo mkhyen brtse rin po che, 1910-1991) by Lama Ngodrup

in 1975-6, when no complete set of these volumes was available outside Tibet. Following the reprint of the 4 volumes of shes bya kun khyab mdzod and of the 18 volumes of the gdams ngag mdod, we are now pleased to present an expanded edition of the rgya chen bka' mdzod reproduced from prints of the xylographs kept at dpal spungs monastery in eastern Tibet. The present edition includes not only the main collection of Jamgön Kongtrul's writings but additional liturgical collections (such as those pertaining to the bla ma dgongs 'dus, rat gling phur pa and thugs rje gsang 'dus) arranged by Jamgön Kongtrul, for which separate sets of wooden blocks existed at dpal spungs, as well as a few miscellaneous writings that were not part of the other treasuries. - Matthieu Ricard, Shechen Monastery, May 2002.

红	७७। । प्रहरासर्वेद में राष्ट्र स्था हुँ हों बासवर प्यया ग्री गर्स राय हिंदा प्रो स्थित स्था विकास स्था विकास के विकास होता को विकास होता होता होता होता होता होता होता होता
3	नक्षेत्राधेवासेन। १९ १४५-१६८ नक्किराधेवारगाराळवासेन। च १६९-१८२ स्राप्तास्त्रात्मेन। ५ १८३-१९२ नेतिक्किरासेन। ६८ १९३-३८० स्राप्तास्त्रात्मेन। ५ ३८१-३९६ न्यरावस्त्रात्मेन।
-;;,	वर्षाभेता ११ अग-४१८ द्र्यात्म केंगा भेता ५० ४१९-५१८ वार्सियात देत्र स्थेता व ५१९-५२२ केंत्र त्यापार स्थेता है ५२३-५३० क्ट्रेंट्य स्थर द्रवह केंगा भेता १९ ५३१-५६८ वार्हें र द्रवह स्थेता
그 그	८ 569-580 ह्यून्यमञ्जेन। २५ 581-630 क्रुम्होन्यो ५ 631-640 नङ्गोन्सेन्यमानिन्योग १० 641-682 नङ्गोन्स्यमानेम्यमा १० 683-690 नङ्गोन्योग १० 691-742
i	बिंद्राधिवासेवा ३ 743-748 वर्हिरावर्सेवासेवा १५ 749-800 सर्देश्चेद्रावाचेरावासेवा १८ 801-848 वर्हिरासेवायदेवायदेवा १ 849-864 वादास्वायदेवा १ 865-868 वासरा
73	क्रीस्थानेना त्र 869-874 नर्हेन् नक्र्यानेना ११ 875-896 नक्रीत् क्रीनायाने स्थानिनेना १२ 897-920 सर्देन हेन् त्याने स्थानिन १ 921-936 व्यक्ष निविधित होना १२ 937-970

श्चित्र खेता स्टेग ( 971-986	चगाय:शुर:सेव। थ १	987-1000 सम्बन्धित सम्बन्धित	<b>M</b> 1001-1030	নহম নৰ্বামা	
<b>8</b>					

40.00



वाक्तर्वेशक्षर्यक्ष्यप्रदेशकार्यका विक्षरम् विक्षित्रम् विक्ष्यक्षेत्र । IN BREEZE INDE विश्वर्रस्ययार् इतिवा प्रविरण विवादक्रणार्गी शिवराम्ब्रीशर्याम्ब्राम्ब्रीयर्था विभित्तित्यम्ब्रीत्वित्यम्बर्वित्यात्या विष्यत्रेयत्यत्वित्यत्या विष्यत्यत्य मिला नेपाहकेर हवाशक्ष मार्था मुक्त देव मिर्व हिंद मिर्व हिंद मिर्व हिंद मिर्व हवा मिर्व हवा मिर्व हिंद मिर्व मिर्व

विव विवादिक्ष विवादिवादिक्ष विवादिवादिक्ष विवादिक्ष । विवादिक्ष वि विष्टेशः स्टब्स त्यायर व्यायम्बर व्यायम्बर्धित्य के के देव के त्या के वास्त्र में के वास्त्र में के वास्त्र में वास्त् हुर्र्यक्ष्ताया अवहूर्यीवम्यूर्यात्र्यात्रम्भावरण्यंत्रहरात्र्वमान्त्रीर्याय्वयात्री वर्ष्यत्री उर्द्रम्भावन्त्रम्भेवस्वयायाः

शिर्विक्षेत्रेभ्ये म्ब्रेट्सेट्स्ट्रिय निर्माणक कार्य स्थान द्राम्यहिले केर्स्स्य केट्स्ट्रिय हेर्स्स्य केट्स वध्रमाद्रवर्ष्ट्रा श्रेश्रदेश्रेवर्षाश्र्ववात्र्य्ववाद्रवेद्वित्त्रात्रहेत् विविद्द्रिक्त्यार्थितास्त्रक्षेत्र र्द्वोद्गीदवादिक्षुवोदेन् बेरः ं व्यक्षित्वों श्वित्ववस्त्रवि देवहेशक्षेत्रस्थ्यों दित्त्वा केव्यवस्वस्य स्थानस्य निष्य निष्य विषय स्थानस्य स्थानस्य विषय विष्य विषय स्थानस्य स्थानस्य विषय विषय स्थानस्य स्थानस्य विषय विषय स्थानस्य स्थानस्य विषय स्थानस्य स्थानस्य विषय स्थानस्य स्थानस्य स्थानस्य विषय स्थानस्य स्यानस्य स्थानस्य स्य स्थानस्य स जिराय नेवाधारा राज्ये । ब्रिक्श परिवास सम्माशिक रवा तार क्षेत्र महिला परिवास माने परिवास माने विकास माने परिवास मा

**~** বিশ্ববাধ্যক্তির প্রতিপ্রের किंद्रवययद्यपद्यभव्यवस्थाव। निर्मेश्वर विद्यालय सर्म <u>जिन्नुसम्बद्धाः</u> गुरुषपाल दुसं दुन्दु स्थाप दे। निर्देशकुर्वाद्यं स्वापाविता किस्यावयात्रयात्रे हेर्ग्ययारायीय ह्रमञ्जूषमान्त्र क्रियम्स्य प्रमानः सर्वपान वियाश्विद्वस्यश्नर्भवित्रसम्बद्धर। विश्वायम् विश्वायम् लेबर्सु वुकुरूईवनई अञ्चलात निर्देश ब्रेट्सदेर्द्रास्य इति त्र्या स्याद्य यह त्य श्रीत्य विश्व के के द्र द्र की द्रया स्वीता ।।। क्रमान्यसम्बद्धर्यात्रेर्द्धरा S S . शेवाश्यवक्के देव कर्ण त्र्वेर्यरव्या 174944NA यान्यक्षु कुंगपर्शपर्शस्य सुर्भागपर्रहें स्वेद्देश्वर विषय् 品品 र्रेट्यूर्रर्र्याण्ड्रकश्रह्मार्क्रभावक्र - धुम्याई नुरेयप्रयान्यायर श्रुर्ग पर श्रुष्ठन द्वाया त्वासक्रियावायावा क्रिकेट दिलाय विस्कृति दिल्ला विस्कृति विस्कृति विस्वा लास्वयाहता

V C V V O 0000 स्रेम्बर्ध्यग्रस्थित्र विरम्भ वेश्वयद्वारा वर्षणा DE WANTS देश्याम्त्रेत्रेर्वेद्वार्व्ययम्य स्थित्रित्रित्र प्रवृद्य गण्यक्षेत्र हु ५८७० विमा यत्रेहें भगर्थे। क्रिने श्रुव राज प्रवास प्रवास राजा । स्यह्मार्थिद्दित्रम्यायस्यस्यस्यम्या विषर्वेत्रदक्षिणेर्ड्याच्यैत्यञ्चयञ्चेता । न्या प्रदान के विषय इलावर्डेर के बर्शेंदे दे क्रियाव किरवर्डेर। **अपहार्यहर्म्यकृत्वल्व** विश्वित्रक्ष अञ्चल स्वर्धिर ल्यहर्ष्यम्ब्यहर्षेत्र । द्याद्वन्द्रनम्बद्धभन्ने। दिहित्य यह विश्वय छदा **ॐनर्ड्येहरु** भक्तेपहुँ ल्या है जा है नियं के प्रमुख्य है पर लेयहं ये द्रष्ट्रात्मा अथवा मृत्यु द्रहे द्रुवता क्षियह में इसे में मिर्ट पार्ट में के के किया "अभेड्री इयह्चलकुर्येत्रधेत्रहुष्त् ॳॹॕड़ॕॗड़ॕॗॸॣॕड़ॕॗ<u>ड़ॣॗॗड़ॗ</u>ड़ॗॶफ़ड़॔ॗॴड़

नेक्श द्वत्यमह्त्यम् विवेद्यस्त्वे स्वाताम्यस्य वापासन्त्रीर्श्वेशनवोग्राश्चित्रवार्ग्यात्रीर्वेदयावीर वहत्यावीर वहत्यात्रीर विद्विष्ट् इ्डिक्रम्भेशक्षेत्रम् अवदेश्वरस्था बीरमह्त्रक्रपद्धाक्ष्यक्षेत्रवेरा क्री नयन्त्रीयार्ष्यन्त्रमृत्त्रीयार्ष्यन्त्रम् वर्षेत्रम् वर्षेत्रम् वर्षेत्रम् वर्षेत्रम् वर्षेत्रम् वर्षेत्रम् १। द्राम्यस्य मार्थिक्य अक्ष्य का विक्रिया विक्रिया क्ष्य क्ष्य क्ष्य क्ष्य क्ष्य क्ष्य क्ष्य क्ष्य क्ष्य क्षय | अक्ष्य क्ष्य मार्थिक्य क्ष्य | विक्रिया विक्रिया विक्रिया क्ष्य मार्थिक क्ष्य क्ष्य क्ष्य क्ष्य क्ष्य क्ष्य श्री हैंब क् स्मर की जन्म हुं अब हे म् श्री हैं प्रस्ति के स्प्रेस के स्था कि स्था कि स्था कि स्था कि स्था कि स रिंग कर्रेहे देश याति है। विद्या क्षेत्र विद्या **इ**हितेसक्षरायश्याप्तरत्वेग ः हिस्ट्स्चर्युत्यरहेक्क्युस्या रोट्पाद्य विस्त्री अवाय वर्त पय शुर र्भेर्प्याद्रताची अन्यक्षेत्रका

केट.तार्ट विवर्ष्ण्य वाज्यवा अर्चेह्यन्त्रमा है। अर्वनगरन्दर्द्रक्रिक्टर्हा क्रियम्वार्ष्ण्या । श्रेट्ययम्यन्तिन वित्तर् विषयक्ष सम्बद्धे श्रुद्विति विद्यो वह वर्षे पर्दे वर्षे विषयनविषयम्वयम् अर्रम्यो विषयम् विद्वार्थम् विद्वार्यम् विद्वार्थम् विद्वार्थम् विद्वार्थम् विद्वार्यम् क्रिक्र में स्टिन्न क्रिक्ट स्टिन्स् स्टिन्स् स्टिन्स् स्टिन्स् क्रिक्ट क्रिक क्रिक्ट क्रिक क्रिक क्रिक्ट क्रिक क्रिक्ट क्रिक क र्षमाना अन्य स्वास्ट हिनाय केंद्र संस्वादर मद्रवहान अयतार् रावाप्रेशर्वेशस्त्रां र्यात्र्वाकुक्त्र्र्यत्याकुर्यः । वित्राकुर्यात्र्याकुर्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्य

। भिष्मश्राच्या भेग न एक्ष्यां भाष्ट्रभाग सारी भारी म विद्याष्ट्र ये श्वेय राजापीयाम् रोजा भा श्चिम्द्रिया द्वायात्र या स्थाप ्रियमकेव्यप्ट्वान्केपर्रावेद्यू विश्ववास्ट्रा 1यवंगयनगर्य रूट्ययदिद्देश्यूपयूर्य द्वार्यया क्रुवायदेवसम्बद्धा <u>क्याच्यकरमञ्</u>री र्वित्यर्द वेश्वत् स्वनुद्धवास्या रिट्युक्यविवे पर्यस्य सुन्तर्वे . क्रेड्रिकाजगार्नेहच्चनान्त्रवायाङ्ग्ड लेन्द्रेशकुर्विद्रलेखानत् कुत्रुन्द्रिय द्रार्क्यवण श्वाय वेद्रद्वय पद् পর্যমন্ত্রী प्यवश्यक्ष्यां धैवाशह्यूर्यं रागा विवर्ष्ट्येश्चर्यादेः । स्वर्धिकानश्रम्बद्धः |बह्यस्यद्भूदवदेः । १९४ श्रि स्थापत्ः

0

्रेड्डिड्डिड विभव्वेशनकूषम्या इंटिडिड्डिड विभव्वेशनकूषम्या दश्यमार <del>वर्</del>यदेश्क्रीय सद्दश्य पर्वाया वेष" 1यर्वात्रवाजायाय्येयाञ्च साम्यास्त्र र्वात्र्यं स्वर्धे स्वर्धे स्वर्धे स्वर्धे स्वर्धे स्वर्धे स्वर्धे स्वर्धे रत्वे विवास गायसद्वयस्ति स्ति सम्बोधस्य सम्य सम्बोधस्य स त्रिन्निश्यक्षराधिराधरायकार्षे वस्त्रवर्ष्ट्रविद्ध्यक्ष्यक्षेत्रवे क्षेत्रवर्ष्ट्रवर्ष्ट्रवर्ष्ट्रवर्ष्ट्रवर्ष क्षेर्ब्ययस्य सर्वेद्र स्य स्य सर्वेद्र यह प्रदेश स्था के के स्था के सब्धे ने के स्थान स्था धर्म्य निर्मित्व मेर्गित्र विर्मेश निर्मेश निर **मन्द्रियान्यहे**छ। યય પેંત્રસુદ્વન્સ કૃષ્ણ વસંફૂર્ कें अवुद्रम्युह्येश्चर्य अर्थेन वन् वृत्र् નાવબઢો અર્વે વૈદ્યું ન્દ્ર ગહારા છે ચું ન્દ્ર ष्णवायन्त्रविद्यायद्याय दुष्णे सुष्णु दुष्य साम्यद्द् र्श्ट्राहिद्दावश्यायाया रंतकश वर्दश्चित्रवाहेर्या कृत्वास्याभ्यास्य स्यास्य स्यास्त्र द्विन्ते त्रीत्र स्यास्त्री स्यास्त्र स्यास्य स्यास्य स्यास्य स्यास्य स्यास्य ।केंद्रेक्ट्रेग ।श्वरहर्द्देग STATE TO 0

त्वावीन्द्रिद्रदर्देश्यभावर्षिद्रेद्रिश्यम् स्वाद्ध्यायम्बन्दि स्वाद्धयायम्बन्दि स्वाद्धयायम्बन्दि स्वाद्धयायम्बन्दि स्वाद्धयायम्बन्दि स्वाद्धयायम्बन्दि स्वाद्धयायम्बन्दि स्वाद्धयायम्बन्दि स्वाद्धयायम्बन्दि स्वाद्धयायम्बन्दि क्रियास्त्रिक के के त्रात् में देश के देश का के में त्रात्म का माने के माने के बर्दर यह जाया देश हैं है। अर्बरीशक्त्रक्रिक्ट्रेयवर्षे वर्षे नुसन्धुन अनुस्य न द्वर वर्ष्या विभग्रह्म देन्द्र विद्यार महन । यन केद्रायम् समा हिन्दि व स्थाप क्षिया विद्या व बारमार्टिका में माना रात्र पान प्रमुद्दे तत्त्र देश वर्षे वा म मस्याद्वीद्देश्यस्त्रेद्वयायायव्ये । शेयस्त्रेद्वययायत्यस्य गुन्द्द्वता । नस्य द्वीद्यत्ये यस्त्रेद्वययायव्यी

राम्युर्दे रत्वविद्वेद्वस्वानपरियेस्वयक्ष्यक्ष्यक्ष्यक्ष्यक्ष्यक्ष्यक्ष निर्णान्वीनर्विद्धिन्तिन्येत्रवाधर्द्ध्वा रिडेनसद्धिन्द्विद्द्विद्द्विद्द्विद्द्विद्द्विद्द्विद्द्विद्द्विद्द् कियू मेर एक हुन्ती स्ट्रिट श्रुर इंडिट शिव हैंग राउर र क्षेट्सरक्त्रत् क्षे प्रथायिय यह स्वी विष्येते देवे देशवंश्वर द्वर सुर न् श्रुवृह्ण्ययकृषा पंग्रहराई। स्राह्म अस्त नेयम् अध्यान्त्रीर्द्धस्य देवाह्ट्दा अध्यान्त्र अहता वियम्बद्धिका स्वाबिश्यम् निर्णयम् विद्यान्य विद्यान विद्यान विद्यान विद्यान विद्यान वित्य विद्यान विद्य र्तारायाने राज्या से स्थानित के निर्वाण स्थिति स्थानित स्थानित स्थानित स्थानित स्थानित स्थानित स्थानित स्थानित वित्रयन्त्री

क्षु भेषार्भितृतुनगश्चर्यकेरेवावगणशायदश्चविश्चर्यविश्वर्यक्ष्ठित्यस्थित्। स्वाप्तित्तुस्य स्वाप्तित्वा स्वाप्ति स्वापति स्वाप्ति स्वापति स्वाप्ति स्वापति स्व नग्यने पर्यस्य स्टाउत्तर्मा स्टाउत्तर्मा स्टाउत्तर्मा देश्यायन्त्रत्वाच्याद्याद्याद्वाद्याद्वात्याद्वात्या देशकार्द्र बेस्ट्युंका अंत्र भय वर्षे देव देव विष्य के स्तर्थ संस्था श्रिक्ष स्वाय स्याया है यह है दे हैं दे दे हैं दे हैं है है दे दे हैं के लेक त्या के वन्यहेंहरे कुँ तर्श्याद्वी यनत्व यनि दर्भ वो सुभद् अन्य सुर्य <u>इंगेल्न्युभयम्</u>वस्य राज्यसम्बद्धत्त्व नर्शित्रहं अन्द्रिन्छिन्छिन्

न्तुं नही

। श्रेष्राश्चित्र गर्धे गर्धे भर्धे भर्धे भर्थे भर्थे

नधें बंदू रेति है ति है।

छा वन मिय देश सामा या स्याउँ स्या है

<u> इंहर्स</u> निके

हुर् कुर्जियकिये प्राक्र न्यात

सन्दर्भ अस्ति

हिनाहरी

বা্যা

भेपर्श

က

न निम्मित्र हर्ने

EG

गुड़ी

12

めて言うなくれています。

R/S

신입

571

न्त्यम्य भवा शरा व अश्वर्क

व्यवक्षेत्र व्यक्षित्य स्ट्री सुरा क्षेत्राच्याप्य प्राचन राज् क्षे क्षेत्रकी इःद्वैदेर्दे बयापस्य स्वेत्रस्य प्राप्त यतपत पता नयमर्ने नयम् रस्त्रन र्वाप्य बेयब्रुव्यवण्यें ब्रुट्यक्ष्य यहें हे रोयबर्य देवें विषर्य या ने दि स्यभूर्य गरम्ब्ग्रम्य देवदेवदेवदेवदेवदेवदेव <u> च</u>ैभग्नद्गर्थायुर् कुन संजावर्ग में से बाराया रहे महाक्रवया देश संविद्या तीया क्षेत्र ता माना तीया क्षेत्र वा में स्वत्य की प्रति के स्वत्य की प्रति निर्वरमानेवसपाविदसस्वला । र्हेड्सेससद्पद्मापावद्वद्या । अध्यवने ने द्वार्क्षण के प्रमान मध्यम्बी बेबम्बायन्यमध्यायस्थायस्त्रमार्येन्द्रायनस्यस्थः। हेदश्चन्ध्यायिस्यनस्रिन्डेवायायादस्यस्य होर्वेर्यस्यायस्य स्वायावस्य

विर्मित्वेस्यावहेन्यस्य स्थात |यविद्येरेवे चेळिलव्हर्वेद्यक्र्यग्रुस्क्रिकाशयणग्रुस्कृतगर्भार्त्रेहेत्ववरक्रिश्वहर्या स्मुलेट्री -र्ह्हद्देशन्थायश्चित्रास्य **स्ट्हेन्हेन्हे**र्ने स्ट्रेन् ग्वद्यकृत्याग्वत्। वेदक्ववयाग्द्रमा ग्वद्भरयाद्या अनुस्य ग्राम मदलग्रासुत्राधी अन्तरपान द्रान्य स्व स्थार् स्व न्य देश स्व न स्व इन्य विच देश हैं न विच विच विच विच विच विच व श्चित्रहेन वयस्य विषयुषय देवे तर्न्यूयन्यन्यं त्या इत्य यह्य य क्षेत्र यक्ति स्ति स्ति स्ति |ह्यज्याम्या विस्वयर्त्वेवरादेवर्त्वर्त्वत्वस्कृतसर्वयर्ववयर्ववयय्ववय्यकृत्वद्वस्यस्यस्य स्वात्त्रः स्वर् क्षेर्रे भर्र विंद् केत् चे पकु पुरुष्टे प्रि अर्शितेयवितयानीयराययविद्यार्गिकता न्त्याद्रम् व्यायक्षयम् वर्द्द्वाद्द्यद्याद्द्यदेत्तद्वेयपदेत्ववयक्षयद्वद्याद्व

<del>।नद्दवश्चेदव</del>ी

क्रियंत्रवाक्षित्रहेवयायम् वियायन्तर्हितेयः वायोवेयक्षित्रक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्र्वेत्र्वेत्र्वेत्

न क्ष्याचेर्त्रेर्ड्ड्व्रिंग्रेन्ड्रा

देशकार्य भविद्यामञ्जूष

শ্ব্রুঝ্রু"

न्या वीर दश्ये दश्य स्थु यु के न सम्बद्ध र गद्द मेरे। शरपार हुं भ्रेवायी दूर च्रें र भ्रेवाय क्षेत्र व व्यून हेड्वा मूप्हूवा य वेट्सर सर वर शनव रावा है दिन्नेरतर्वे पर्न परमा शुक्ररपाया

रिश्वास्थाने क्या विक्रम्

क्षें रुख रुख रुँ हुँ हु। रूपलके व्यइं ने रुण सुसर्ग यह रूपण यय के व विविद् ने यह रूप

न्द्रवात्वायक्षेद्रवात्वायम् ।

नुज्यस्थ्यस्य स्थान्य विद्वावाद्वरेरे गुज्यस्था

া শ্রম্পতনগ্রীষ্ট্রবিদা গুঁশ শ্রুব্যা 🥤

गण्यस्थारस्य वैषानाः या

याणेपादशुर्येषा यश्चियहून।

श्चरहस्त

|**अ**द्गर्दश

वृत्ति स्वाया विकास स्वाया स्वाया स्वया स्

लेनमेरत्वा द्वितान्त्रेर्र्यक्षाक्ष्यात्वात्वात्वात्वा

विक्रमान्त्री विक्रमानविद्वेर खेरवहुमाने विस्थानविद्वि विद्युर्ख्य

ध्यसदिन्द्रेह् नव्यक्षेत्रम्यक्षेत्रस्य स्थानस्थान्य

वणवारीयासेवरियावनराम्या

नहीं देशेन्द्रे र्वेचर्ड न्युमर खुरा

नेत्रकार्यन्त्रेरत्यं कुरान्यस्था

**SCHO!** 

21-1 श्विकक्रक्ष अवश्वा विश्व विष्य विश्व विष्य विश्व विष्य रतः योगमन् वाक्षविद्वारायर्या **अन्दर्श्वेनअर्श्वानादन्द्कुन्धन्** र्विवर्वावीद्रस्वित्रेशक्ष्र्रेह्रित्वद्रिया वान गर्गान वार्त्तिक वा अवारायक्ष्यक्षया क्षेत्रक्ष्यर् नर्भविते के अवित्व वित्वविविविविविविविविव व्ययनविष्यिक्यकुर्यदेश्वयश्चीयरेवया ळॅरगरायकॅर्यदेशेरवा वेर्भ्रवास्त्र्व्यक्र्वा মুবাধুবাৰা শুক্তি নাম মবৰ পৰ্ত্তি না विन्स्वराद्यादर्कित्रोचिसर्वेदवर्षेवसन्ते। र्र्ड्ट्रिक्ट्य-प्राय-रहिन्द्यावयावसम् स्ट्रिक्त्यान्त्रम् स्ट्रि 13 -विश्वाप्टिव्युन्तिक श्रा -এবন্তিশ্বক্রবৃত্তীপাব্কুবৃদ্ধা व्ययनविग्ययस्य स्थान्य द्वा विश्व विद्रा येनेशकीर्वेद्यम् नदेशीन्त्यत्व्यव्यवि॥ गर्भे व मुख्य यथा सुअदे वृत्य र्वा है शया सुसर्ये हैं निर्देश में अहें वेद क्षेण रादे त्र अंश्वर्व स्वायापाराक्ष्य श्वारम्भित्रायापार्षित्रूर्यात्रवृद्धायार् नित्राया श्चरश्चेवर्चः <u>स</u>्यार्थ्यस्थ्यस्य

,

विवस्तानम्बर्द्रवेक्षव व्यस्तक र्त्त्रकेर्द्रहेर्द्रहेर्त्त्रके वर्त्ते वर्त्ते वर्त्ते वर्ष्ट्रवे वर्ष्ट्रकेर् । हुँचे वृचे सहे यह है । स्यक्तियोग्रयन्य यद्भावन्य विद्यान्य यम् क्रियम्पर्यर्भे सिद्दि के विवादि र द्वार क्षित्र के विष्ट्रे प्रस्ति है विवादि के **इ**०१५ र्श्वेरवितर्भयन्तु व्वेष्वेष्यम्य भूवा हे स्रेयभवर वुवाश **এপ্র**লর্ र्याप्य જે જે જે **अन्दूर्हित्यसम्बद्धाः** । देलवामबानुरस्यकासभाग्रेसुरानुरा नुस्यम्यद्रगम्त्यम्यद्रथ्यत्"। स्रुअक्कित्र रूपन **न्यत्यत्यत्** 4777 ग विष्ठभ्रम्भूष्ठभ्रम्भूष्ठम् मुन्यमक्षम् क्षेत्र क्षेत्र स्ययम् स्ययम् स्ययम् 

, र्श्नेर्डिययर्डेर्बर ब्रिंबर्वावुद्वय्येनर्द्वर्त्वर्त्वर्त्वर् क्षेत्रहर्रे मेन्ड <u>|पहंबूर्</u>स्थ नर्श्वाणेलव्हित्वत्त्रिविद्विवित्त्रिविद्वित्तिविविविव्यान्त्रिक्तिवा 199 स्नह भेगम अर्थे हिन्द्र अर्थे हैं के के प्रमान विद्युर विद्युर दिन विवाद विवाद विवाद विवाद विवाद विवाद विवाद व **ॲन्ड्ने**न्ने ५३ नुदर्वेग्ययं नेहु विवव वेर्दे हे इश्व वेद्य में देन के या के व्यव विवय वा নিক र्षे नर्स्या सुनि हुर्यनिहर्मान श्रेश्रे देश्य वर्ष दिस्य वर्ष हिंदान वर्ष ताना नर्रोर्यम् अस्तिर्वे क्रियान्य स्त्रित्यो **প্রমন্থ**র্ক নুম্ ब्यनुरत्भ्रापश्चीयव्यविद्ववानुभिर्दर्गयायवित्रवीत्तरव्यवाद्वरभ्रेश्नेरवया निर्मर्द्वाप्यद्वम् यर्भे द्वारायद्वित्यद्व असेरमेर्यरदेस्यके पर्वाउवस्या निक्न गतर्वण मुख्य मुख्य सुन महिल मुक्र सुर्दे सिन्द्र परिक्र महिला यास्य यास्य स्थान्य यास्य स्थान्य यास्य स्थान्य स्थान स्थान्य स्यान स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स् स्मित्रवस्वत्रेत्रियद्विष्यव्यक्तिम मित्नीस्पानस्पक्तित्वार्। गर्डेतिर्दरम्थर्थरक्रिसेवान्द्या सुवस्यस्यस्य सन्यूद्याद्र्य इपर्दे द्वारा देहे वेश सु-१६१८ नियायम् क्री नियम् मेर्ने अन्यम् स्वर्षित्यके स्वर्षित्यके नियम् नियम् मेर्नियम् स्वर्ष्यम् स्वर्ष्यम् | र्वायक वृत्वाम हुर्द्ध विस्त्र र्वा था बड्नहा अवाह या न्यू ५ शह्युयार्द्ध पत्। ख्ड , विवेशह्कुत्रस्थत्रश्चरा

वार्याः

\$541

किंग शुक्रिये देस्भय १३५

**जैन्ड्यू** 

चर्ड्याविश

विविधार्ट्रम् अधिकानि विचिधार्थे विश्व

F4W

一般国内所教のというからいているだけは

हेन्यथा

क्रियाने वाशक्रियाने वाशक्रिया

वेशक्षेत्रभ्यक्ष्यक्ष्यक्ष्यम्बद्धः।

कुँद्रं यत यत्।

।क्रमश्चित्रेन्द्र्य-मेन्यश्चायर्गा

4475

जिसद्दर्भ ने सम्बद्ध है से असद्दर्भ

Sau

भोक्षभ <del>४वदेव</del>श्चर्त्त्व के निर्देश

354

श्रेष्

**५**५५५५ वे५ बळेग गें श

विद्वारापरिमार्केरवा नेवाशस्त्र बार्गा

77-9-W

3

क्रश्च है त्या

**યુ**વદ્ધન્<del>ય દુદ</del>્દેગવી

Œ

SITURIAN TO

**ंधःक्षः**"

र्वेद्वेदर्गुकुद्धभाग्रस्वर्धरमान्ने

**ঐশ্বিমন্তবর্থন**্দ্র্র্বর্

विश्वयास्य स्वासर्वा पर्वा वर्षा

केंकिनेनिन्नास्वहर्हिनेकें द्वाद्युद्युद्युकें अवायके अवायके हर्ह्नैनेकें । अस्तरिक्ष्यियक्त्य-वेग्रस्य व्या 568 , শ্রমণার্ক্ত শ্রমণার্ক্তা र्षेषोन्ध्यून्तेर्नेः 2.2.x वेशनहॅर्द्धन्छत्यक्षात्वन्यस्याद्वन् नगनगर्धः व्हान्द्रस्यहे। おきつ परेग-मेग्य वेज्ञर्र्जेय द्विर दर्ग प्य नम**्यस्य स्**यन्त्र सुर् । देने के देन देने देश के करा रिविद्यात्रक्षर्यस्यर्यस्यान्वेयाकार्श्या में कि श्रेव्यक्षर्त्वर्रिक्रिक् ॲ.वें नेर्गय द्वनई बन र हुन् बन या पर्डा इंड्रिन्ड ने ने ने ने नाय त्यई अव दिश मुन्द्र हुन्त প্রথম্ভার 37-91 धनवुनगर्य ग्रेंच दी शेयभ्य वर्षे द्वीरवव हैवयर गण्डी रहेर। । ये ने राष्ट्र वार्षे यनद्र यद्वे द्रावे राष्ट्र या । ये ग्रुपदेव के देने के द्रावा ना के ग्री या वार्षे वार्ष विद्यम्बर्यस्य त्याराश्यार्थेय। हेरम्बर्यभूद्यतेष्ट्यञ्चा **अस्तिर्भन्** या पस्या छेह है है पड़ी। **गया**यहा गवापतुर्धन वर्षे युर्हे 44.23 ক্ষরশ্বস্থ বৃত্তি বৃষ্ণ ব্যাদ্র স

क्षि क्षित्रका म्यूनरम्भू वनमैग्यत् क्षि क्ष्रमूच्याप्रमास्त्र सम्बद्धार्थित्र क्ष्रमूच्याप्त क्षित्र क्ष्रमूच्याप्त क्षित्र क्ष्रमूच्याप्त क्ष्रमूच्य क्ष्रमूच्याप्त क्ष्य क्ष्रमूच्य क्ष्य क्ष्यमूच्य क्ष्य क्ष्यमूच्य क्ष दशक्रवारामश्चवेदश्वराणे। ।द्रायकेवर्षवाद सद्यार्यर द्रायकशा ।दशक्रविश्वववेशववश्वराणा । स्वार्यव्यक्षवादवा सुराद्वार्येन। विवास्तर स्वीर वार्षित्र वार्षित्र वार्षित्र वार्षित्र वार्षित के विवास वार्षित वार्षि स्त्रिक्ट्रिन्यास्यासी स्वर्धिक्ट्रिन्यसामादी स्त्रिक्ट्रिक्षेत्रक्षेत्रक्ष्र्र । स्वानिक्ष विद्वादेशिवाद शुर्क्क वर्षे पीदा शिवराय्युंपुर्क्षवाश्वरश्वरायक्ष्यं । विष्यपूर्वहेवद्वर्षक्षवाश्वराया विरम्बाक्षक्रकः। |स्त्रद्रीयवर्ष्ट्रद्रायायुवा

यवा सुनुत्ता है इन्स्याय प्र **इ**ंड्रूँ वैदें **इहिन्यू या होहिन्यू या** *J*568 I 44 2 B शवापतुर् स्यवस्या र्रेड्रिया-मेर्वामायम् अवे भे मक्तिर्दे वे स्वर्धे भयमायार्दे द्वामाविष्ट्रियाय वृत्ते वे स्वत्तु प्रमायमायार्थे हेर्<u>र दहिं</u>व्येत्येशयात्रः शुक्रणश्रयश्रय । स्तः र्जनवर्षवर्भ वर्ष के के के किया वर्ष विग्नान्त्र न्या में हैं वेद्रे देश है वर देशी मार्क वर्ष प्रिक्ष सुक्ष राज्य सुक्ष के वर्ष ना श्रामा पर दिन हिन्दी के अपने देवा। नपश्याद्वस्य द्वेशयविस्तेय इदेश W.44. न्त्रहर्तेतिश्रामक्रित्कृत्वात्वे यक्त्वात्रे व्यक्तात्वे श्रामक्ष्या から、こ देशस्यरवाधिरवाशुस्य वर् वरवानीवास्य वस्य ४५ | हिंद्र हे यू पनई सञ्जन स्तूड्र ये १५ है। क्रियन्त्र विवादस्यान ई य स्वाद्य प्रदेश **अ**थवन् वृत्तान् उत्तर श्रुवान् श्रुवान्

प्रसापरविकास तपुर्माने सक्ति हैं व यागर भूते या है। वनक्यास्त्रीत्राक्षस्य विक्र द्विकाई दें अरुगू या स्वारी है का हिन्दु हैं। **डेश्वबेश्वयप्तप्तम्ब**। | दिनदद्वे वृद्धं वशक्र दे दे देशक व किलेयातातातीराजन हैं पूर क्षिण्य वहें देर्य कूष्ट्रा वाल यह हे पहुर्ता र्लजनस्थान सर्हे ने द्यार्य या सम्बद्धां या कियाराम् क्षंत्रकीर जाजर हैरे पड़ेरे क्रिकार देरे वर वर्ति क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्ष । सुद्वायसम्बद्धायसम्बद्धायसम्बद्धाय रद्रायाग द्रेशा क्रिक्ट हिंद द्रवादय इन्द्रमण्य रिर्मेंडजन्म भाष्ट्रियोर्जेट की जान के बीय ए हैं बेटा केंश्रिकार्या है दें जी देशर के बाद्या न है ए हमें या विशासन्दर्भाष्ट्रमस्य भुव र्मानकुत्रास्त्रस्यायन्या ्य व्यवहारी ने उपास है में है प्रदेश किंपहं भेड़ेर्गपर्चे में देखें। रद्भेद्वीस्थादर्द्रम्बुद्कुक्तस्यम् हर्वस्यक्षेत्रक्षेत्रम्

ल्लान्ड्र मुक्रुगाप्ड्र में हु-मुन्हुः 7501 ल्यास्त्रे ने द्वारामास्त्रे ने ने प्रथ नर्त्रपद्मळेषयणनधृभपदी चेशका प्रविवाका मक्षेत्र स्टिन् ।वर्वा नेवाबद्देशवुसद्ग्रेसपवसुद्। नगर सं स्वास्त्र वास्त्र वास्त वास्त वास्त्र वास्त्र वास्त्र वास्त्र वास्त्र वास्त्र वास्त्र व |र८.वैर.८वैर.शर्ट कुण डांक्र.जा । भे छे ५ ५ छेरला भाव में ५ सह ५ दा। , जैनहंकीश्वानहं जैनहंप नहीं के क्षेयइंश्वेतव विभन्तवावद्भवावद्भवावस्था यक्रितिकेविक्रमाविक्षिरमूप्रकेवित्री क्रियार्थिकार्यकेवाक्ष्मार्थकवित्रक्षेत्रकेवा देशयमजाईदेणचयुवक्षुं सूच्राक्षयाच्यवस्था। मूर्वद्रेरमसुम्बेरकेदकदनना लून्त्रेटाइर्यातातातात्रात्रात् बुभएकपुर्वे ज्यात् सुसार्य प्रति स्ट्रेस्ट स्ट्रास्त्र स्ट्रास्त्र स्ट्रास्त्र स्ट्रास्त्र स्ट्रास्त्र स्ट्रास् क्रम्भ्यहावर्षुगाद्यस्थ्यप्रयाद्या । अने देशप्री पर्यं की के प्रश्रेषा। लेख क्तकार क्षीत्राह्मा पृति दश्ता शक्तिर्दिक होता तक्षा वात दङ्गक वात्रा विकाय प्रत्रित राजनाता कृत्य प्रतास वर्त स्वी से तक्षा क्रू-मेनह्बेष्ट्रेत्रक्तयां त्ववंशः वेशर्यक्षवर्षे प्रदेशकाश्चीवर्द्धित्यः । "'

जबारीयर्वेद्रमेंरवश्रात्मेकाश्रमकर्तवाम्भूच्यारवर्ताम् व्यवस्वर्तात्वक्ष्येत्। क्षेत्रवर्वातत्वक्ष्यार्वश्रम् विवम्हेत्रवर्ष्वस्थान्य स्थान्य स्थान ान्यत्रकेवाञ्चनात् स्वाप्ते । विकास र्वेद्यनेद्रदर्जवेद्वस्थायद्वयाया नरसूर्यवर्यस्य विद्यस्य विद्यारस्य स्था प्राची सर्वे के अवस्ति । विक्रा क्ष्मा कर्षा क्ष्मा क्ष्म ाक्षरेत्रें असर्बेयारेटक्ष्याऱ्यां रिट्यूट्यूक्रवारा द्वारायपुर्वा विकास ्रम्यंत्रप्रस्थक्रद्रियम्बर्धियः सर्वे। |द्वीसअसूर्तमावीजवात्री है विस्थेरिहें विश्वयर्थना से रमञ्ज्यसंदमपुरूषशक्षात्रमानुस्यम् र्यम् र्राट्स्म्याह् पश्चार्म्यद्वाराक्ष्यक्ष्मिणयानस्याद्वा 3 लिस्याह्म वार्के दूर्म बीच से अरिवास्ता क्रायह स्मेट्रे र आयाहे ज्या राह्य है विश्वभूद्रदत्त प्राथम् । प्राथम् । बिर्यप्रियाशहरायद्रया नेवाशवया

क्रमें देशाहराहरू यह समहस्रावहा |य्थवाक्षेत्रक्षर्त्रुद्रम्यद्वस्यात्वत्वद् विह्रिकेर्स्य ने स्व विवास द्रव्या 136 पर्यक्राया सर्वाया स्वाया स्वाया यमासर्वेष्ट्रियाश्वरहर्म् इंस्कृष वेवनायम्य प्रक्रियान्यर त्यहेष्य प्रयास्य मुब्बास्य मुन्यायायात्य द्वीरकाद्व क्रिय्टर्ड्ड अन्य श्रम् रिट्रेंट्रिय्यक्सर्जियः विवायहितः स्री शक्रतिकारात्रीयार हेर्द्रावर विश्व कार्यात्र देश क्रिया चार्य देश शक्र क्रिया क्रिया विश्व विश्व क्रिया क्रिया विक्रियद्शक्षिर्द्यम् विकार्वे वदेवस्य नेवारासंविद्वायप्री च्या अर विवाय वे महासदिर एक कि दक्ष महामूर क्या के तिया क्रियायक्रियाक्ष्यं त्रीन्त्रेया क्रिया 3 र्निटीतम्ब्रकेशक्ष्याधरणक... । गुवच बद्धा कर सुवधा के पार देंग। खेशना में द्रांशकी देश संस्था सकर के वारा ग्री में ट्रेट न दर्श हरे क्या र परिया लक्कार्र्गाय देवार्य संदर् विद्वाद्द्यात्रसम्पत्र्सेवाद्यायात्त्वत्। निरम्भेद्रस्यायक्षार्ट्या विष्ट्रवायर्वरस्य विभएतुर्द्ध

गयणें नुस्थान सम्बद्धान CA RASE वेशम्बद्धवर्षेवर्षेक्ष ं शुरुप्तर्वे हैं त्या सिंद्या का स्वास्त्र हैं। इंदिर के स्वास्त्र । पूर्वाद्याद्विद्यास्य पृत्यास्य स्था प्राप्त विद्यान पर्वेद्रजिद्र विद्याहायाता ने स्टार्वेद्र. क्या न तीरा य देव अप्ते सिर्टिश्च प्राय विश मार्ने बाह्य द्रद्रायायाय देवा के स्थारकूरा विस्तर्यं विस्तर्थं देव विद्यान्त्र विद्या ।वि**र्वार्वेदशम्बर**प्यद्यद्यक्षित्रके | यामर् अयर वृद्धस्य स्पर्वेष सिक्रायदी सूर वाश्व सद्देवशुर द्वायते वद्वाश्वी शवदी रियम्यदेश्वर्षासुर्ध्वर्केत् मुद्र्यक्षरविश्वास्यान्यान्यान्यान्या विषय्त्रुव्यास्य स्था क्ष्रियहरूमा अवस्था में देश माने माने देश माने देश माने देश हैं ता देश देश देश देश देश हैं देश करिया ।पर्वर्वप्रसिवद्यांच्यात्ररविमास्याता वर्ते द्रारवरादर

किरामरत्वस्य केर्डिया केर्द्र्यहर्तिकी क्रिन्त्रीयहर्येता सर्वे नाया 168 ीं वर्धित्य देवें देवें प्रत्या स्थापित स्थेत के देवें व व्यासाव प्रशिव च च द द च देश. विश्वदान देव द्वार श्वद्दिय देव देव देव शिन क्रानित क्षेत्र क् शिविक्ट स्विश क्रास्ट्र स्थारात्र याचेला य पर्देश से इंदर रापदा । प्रदश्यामीय मिन्द्र ख्वाया शिक्षेत्रम्म विवागमान्येन। मैल्यास्त्रिक्ष्रभारक्षेत्रला जिनित्ता के अन्तर्भू राज्य अंतर्भित्र विवाध क्षेत्र में श्रीव में भा ल्लेवहर्वा वीहरू पुरायाया 484 क्षरात्राक्ष्रम्यात्र्यं यात्राचित्रं क्षेत्रद्वाक्षर्यात्र्वीत्र्येत्रत्रेत्रवेत्रेष्ठिवकरत्यवात्रा , उट, बैट्टार्ट्स सार्वारायुक्तिंगी सेवंशक्षेत्री क्षित्रकेर कुराजया. जैर अपूर्वेदी र काता व जा का का का 3 ाण स्वार्ग्स्च या स्वार्ग्स्य इद्ध्यालं स्वात् स्वात् स्वात् विद्यात् । [र्वास्थामित्र द्वार्व विश्ववार हरे भू न स्ट्रा

विचेत्रह्रभगपुरात्रेरक्रेशमह्ता विस्थानवर्तिक्ष्मरह्यस्य विक्रित्र स्वतिर प्रथम। दिस्य निय दिस्से से मेरा सि दिस् ।श्वित्यकेदमतुत्यकेदग्दर्द्व्यंश्वन क्रुंया 一大きがあるといるとからより大きんだって निह्याद्वायन निषय होत्री भारता यदेयाया हिंहेर्न के वर्षे व हवत सुर व दशाया श्वास्त्रासक्षाया विवास्त्र वि स्हित्रक्षित्रचेत्रक्षिण्या । । वहार्षेत्रकेत्रकेत्रक्ष्याप्तर्ध्या |श्ववं वार्के दः यद्भः |श्ववंयक्र ।বথ ধৰ্মী মাৰ্ছ - পুঞ্চ নু ন্মিৰ্বিশ। निक्रम्य द्वेष <u>विषय भूग</u> प्राकृतिक स्ता अर्दः जूरमञ्जयकं प्रतिविधित। निर्मित्र से रहेर के यह राता ने संद्राया श्चिवद्यकेत् यम् येरकुण्यु प्यरवारयू बन्ययाय देयस्य सुरमित्रयुं स्तर्वर दिवाकू सर्वर अक्षा विस्त्रवस्त्र में विस्तर विस्तर से स्वर से स्वर से स्वर से स्वर से स्वर न्वद्रवागुन्वरोद्वहताद्वादावाद्दिया । सुव्यकेदः वाद्वः

र्इड्डाग्रहिरानुस्र्रित्यस्या क्रिन्द्रिय सेवा शत विर क्रिस खेरा । ५ छे भार निर्देश के निषद्य ४ वर्श्वर्याणा श्रव द्वर खेण च सम्भेत्र स रामदेशके व स्पूर्य साने या पर त्याय श्रव महिन्द्व व व या व श्रव हिन्दा व । सन् पञ्जाषा श्री निष् 21 । अमेर्चेट्ट्ट्रेश्न्यायार्रेशा विनगर्द्धे सद्यवद्ये श्वयो मार्थित क्षेत्रमान्य । हिम्मेरिश्ची व्यक्षिण कार्याचेवरित्वीला कार् देशस्य सुद्द स्वा रा क्षेत्रे देशस्य स्व व स्व स्व इ.इ.इ.इ.चनेविर्म्याद्रा गर्ने स्वादेश्यर्से द्वादी वर्द्द्रपति भ्राबन्द्रवादान् 2 341 302 न दिन्ने यही द्वित्याया यम् न ये हाय दे । यु दी प्रेट्ल्य निदुः गृर्श हैं दि कुल खेब सदय में द्वर मनमा है इसकेद्पादी नरकुर्भर रूटके वृद्धे कुन र भेट्टी रिंद्र ब्रिट्ट वर्ग वृत्र व बर्ग तक रेवण नेसुगार्थे वा वेबाय हुन्ता द्व रिनजक्ष्याववाउ विद्युविद्याना | इस्ट्रेंड्**यर्जे म्लेश**व्यक्ति

-विकेश सर्वेद्वर् |अवित्यत्वेहितरावदेख्यग्रम्थः । नुने रुग्य दूर्व र्ष्या ने नाथा प्रमाय के अंद्रिय विश्वास्त्र विश्वास्त विश्वास्त्र विश्वास्त विश्वास्त विश्वास्त्र विश्वास्त्र विश्वास्त्र विश्वा **इ**ड्रेन्डिं स्य-भूषा विद्वावर भ्यापं निष्य **14.4.41** नवाही ।बादुष्यद्गातस्यात्।सात्रद्वात्रत्यद्वेद्वा । चर्यायाः श्वाभागवत्तरानु द्वेष्ठेद्वेद्वेद्वेद्वे विश्वानी स्थान स्थान 55 Cac.dal गत्रेरचते <u>स्</u>चलाय हैरल संधी रवीच्याय श्रुटकेंद्र ये थे। 35 इंद्र्या 12.5 किंदी रोधर्द्भ पत्र 95×93 पाणार्ध शक्तासाझाडा सिंदुर्वायर्देश्यसाळवारा-वेरा विग्रज्हे दुन्से असम्बद्धारा धीसा र्जाइंड... **।**दसकैषायः यूटद्श्के दर्स्य विष्रुक्षे अविवय में इस्य स्ट्रिय यद्राधार्म् निर्देश्चित्रं विविधि अद्भार्थ अस्त्रीत्। यहुर्युया यहुरम्। यहुर्देश यहुपश्रम **र्**हर्दु विके मेरेर्गाय द्वार्यया

बुंशतस्त्रप्रम्यद्रम्यागर्भेयावीरम्यार्ग्ययम् स्वर्षेद्रदेशस्यम् स्वर्षस्यम् क्षेत्र अर्डे दही पश्चित्र प्रतिक्षेत्र देश्चेत्र श्वास्त्र स्त्र होत्र प्रवा 183 न्व लक्षुन्व प्यायी में है है है हैं नारायकी | पद्वातेद्वाक्त्र्यक्त्राक्षत्रक्त्रा यद्द्य क्रियके द्वारी श्रायम् ा शिवस्यायस्य पर्मात्याद्वीत्याद्वाहर्। शास्त्र के ने बाद्या एक वेदि " ছিএকুইব্রিক্রেরাপ্রবার্থনা M्रिट्युक्यर्वेट्रेर्यस्यक्ष्मावता जिन्ने सके दर्भा मुख्य श्रीय श्रीय क्रांभू लेनी ईम्पर्ट्स हैं। ।प्रक्रियक्ष्यम् विषयक्षेत्रयाचारा । नर्मासामास्य द्वार कर्मा । । नर्मासामास्य स्थापन रिट्रें अस्टिं असे देश हैं देश वेश है में प्रशासित ब्रियोर्थर्यर्देश्येश्वर्यर्थर्थर्थर्था श्रिवधी के गाउँ का प्रिवधी के निर्माण जिस्मार्यक्रिटर्यह्याहें इस्टर्सिया पर्यवासा व्यवश्रद्धायम् । नित्रंतर्द्धप्रशास्त्र म्याद्यात्यात्य स्था

। जालू बचा यो यह हु स्था श्रुवत होता । नापश्य श्रेषु व वी शर्दे <u>इ</u>वा श्रेर्द्र व श्र श्र र क्षित्रवाधाद्यस्य प्रदेश्यः किवनद्भविष्ट्रं शक्याश्रमाती ।रिषक्षेत्रास्यक्षक्षेत्रीयन्त्रियः। | वर्षेश्वरमहेस सञ्जाका द्वीरवर्व वर्षा है। | जशुक्षभाषा वित्य हेना वित्य वित्रा विश्ववायायायात्रात्र विद्या हिंहियार्श्नर स्ट्रिस्ट्रिके दर्शिया ता विवासीयक्रामाने भारता केराना होता |ग्रन्वेषश्चिवेयम् चेर्पर् |यरेयर्रेड्डब्र्यर्स्थित्। सर्हेर्यदेश्वे इस्ट्यर्बिनो प्रमान् क्षेत्र स्ट्रिय स् ।यर्केत्रयामकतार्वेदशःसूत्र वंशा ल्यानहरूति देश क्रियाविषावसमूबा अर्धे र तुर दुरन्ते या विद्वाय है दर्भ स्वाय ह्वाय कंपाया विश्वतर्भेरहेर्वा विश्वेष्ये अन्तर्भारः। विद्वारायर्थिक्षेत्रह्यायस्यार्थाः

विवासह प्रवाञ्च स्वाद्याया स्वाय स्वाय द्वा

निरुवार्भनात्रक्षितात्राचारः....दिनात्रक्रतात्री

. मिंच्याक्षणी सुर्धिणया

1286,426

।भाषवमर्वे धेव वदावव स्वते सुव दर्भेषा विपयद्रभेषप्रावदेशकारेद्रज्ञीयवर्षिम्बर्द्रम्। 150 निर्वारावर्णसहर स्थानस्य विश्वायात्रं के शक्तवारमार स्वाय खड़िता त्रवाया रिन्द्र नुर्वे स्वर्थ में अवस्थित स्वर्थ स्वर्य स्वर्थ स्वर्थ स्वर्थ स्वर्थ स्वर्य स्वर्थ स्वर्थ स्वर्य स्वर्थ स्वर्य स्वर्थ स्वर्य स्व ।सन्नवनुस्य परिस्था के शक्ता रास्ट्रस रिक्रियाम्रिक्षणम् स्थान भक्ता विश्वकृत्यात्तार का स्वास्त्र हेन्द्री विवाद् रिक्ता विवाद् रिक्ता विवाद रिक प्रत्यास्त्रियात्वद्यस्यस्त्रित्रे विश्ववद्यायम्बद्धाया NOBON दशक्र बाबाउत्राज्यमान्त्रेयान्त्रात्राहे वर्ट्हे वर्ट्हे वर्ट्हे वर्ट्हे वर्ट्हे वर्षात्रात्रात्रात्रात्रात्रा रिश्चित्वस्थित्वन स्थायात्राह् । देशकार्यस्या नर्वश्चिक्रिक्ट्र्लुक्षराधारतायक्षित्राच्छेष्वश्चित्राच्चित्राक्ष्यविक्ष अञ्चरक्रियामग्रार्द्वर्ष्ट्रियामग्रार्द्वर्ष्ट्रियाम्यक्रियाम्यक्रियाम्य

उतिक्रिटे...क्रिश्च श्रेर्य वर्षा वर्षा दिह्ह के अरिया तर्हे श्रूरा में द्रिक्ष वर्ष ति त्यी के द्रिक्ष के वर्ष के वर् हैं विवासक्तिकार के स्वास्त्र के विवासक के स्वास्त्र के स्वास के स्वस के स्वास के स ल्लू वे ला में बर्ट करी । रेवे क्वर में विक्य का श्राप्ट मा बिर्देर,र्जेट,श्रांकडाकडाराज्जी । तुंके व ते ज्ञाने के व व दा 

के सामहें दाया बुलम्ह्वायम्युक्त्र्याः ए इत्याव द्वाया विद्याया विद्याया विद्याया विद्याया विद्याया विद्याया विद्याया विद्याय छैपड्येड्रिन्स्ड्यता र्ष-विन्द्रगवर्ष्ययपत्र गेहें यह दृष्ट्वियम पसुडा कु अनिर्यत्र विक्री द्रा के वी अपे र देवा तायर कु और द्रवा न ताय अवुर प्वाण मा या दे पूर्व प्रति विक्र प्रति व अगर्गाद्विधता [८१व्रह्मान्यर्थः स्त्रिष्ट्रवान्त्र्याः दरवर्वान्नद्वान्त्र्याः स्त्राच्या 的路 " स्वहें दुरहें वर्ग का ्रदरद्यायोष्णासुद्धरहरसुं वसूर्वस्यूरम्रद्वादी क्ष्रियहर्के देखतु क्षेयई प्रभेदिन हैं . क्याहित्यी पश्चेत्रवा क्षियई स्यार्भे दश्देवता ल भूगह्त्यस्थित्रम् ा फैंन्ड्सेन्द्रिन्द्रिपता केंग्रहर्के में दहते डेशयम्बर्धाः रसेर्वेरवर्के देवतुक्ते 692 विश्वारा प्रमहिवा है और सूच विश्व पर केंद्र जुन्ध्यारी हिर्देष क्षेत्र से वार्य सम्बद्धिया हैरा 3

।श्राम्भवस्र्दर्दे एस्यु निस्

।वाञ्चवश्वाद्भर्देरेवार्श्वरात्रुद्धवरा

निर्केष्ठ्रस्य...

त्रम-भेषास्रस्य परवा

विर्वेण अक्षेत्र वा चाराय प्रदेश महिला

निस्मा विस्मा । द्रमाश्चा निर्देशश्चा निर्देशश्चा निस्मा निस्मा । विस्मा निस्मा क्षि मक्ष्यवरपट्ट्या विवस्तर्य विश्वरम्य म्यास्वा म्यार्थ्या स्वायाः स्वायाः स्वायाः विवाय सक्ष्या भेग विवस्त में विवस्त स्वायाः विवाय सक्ष्या भेग क्ष्या विवस्त वि क्रिर्म्यत्र्यंता विवाग्यव्याविवावम् विवाध्यापार्भेवा विवाध्यारास्यक्यात्र्याय्यात्रात्याः । द्रत्यक्रत्याय्येत्वव्यात्याः अक्ष्याः मान्त्रियाक्री दक्षेत्रायिक्र त्ये भी विश्वाय ये व हैं विश्वभाषान् र से वार्ष स्वास्त्र विश्व कार्य से देश के स्वास्त्र स् क्षेत्रत्रम्था ।चवटस्यस्वयार्ष्ट्र्यक्षां भवावताया ।किंचयुर्वायायायायात्रेयाचेटताय्तात्रीः । व्रिट्यवायाक्ष्यायाप्त्री

विवासहेत्रविद्धरत्वे द्वारोभसक्त्रद्वसम्। विविद्यत्त्रस्य द्वार्स्य स्वार्धित्र विवास |वर्षत्युस्कोद्यम्वय्येद्रिय्युप् विद्वित्र वास्त्र राज्य और अक्ये दूर मंश्विव दर् વર્ગ્ગયાર્જુ સાવવેળ જૂર્યા શુવાન ન .... वेग वहूरी क्षेत्रभावित्रभवित्रमहेद्वरणहेदक्ष्य हेत्यद्वर्षक्ष्यास्यक्ष्यत्यस्य वित्रवामान्यक्ष्या [र्राचेती विरम्नायक्षेत्रप्रमासीयात्र देनाईस्र स्वरूपिय वत्य कर यह र परिते वन कर्य विक्षिणहें मान्त्री हैं हैं हैं हैं हैं से प्रमान के किल्ला के किल्ला हैं जा है। रद्वी सुग्रामा स्वर्ध पार्व मधे रा वियमहेर्पण र्द्रमार्द्धम्त्रमार्भेन्वसम्बद्धन्त्रेत्वर्म्यत्वमहेर्द्धत्त्वर् क्रित्तर्वत्त्रमार्थेकराम्ह्रवमार्थित्तर्वत्त्रम्

श्चरणर द्वेष्ठाक्रक्षणमा स्टान्वेद्वक्षणद्वाधाव तत्र वहुद्वेष्ट्र विविध्याव विविध्याव विविध्ये विविध्ययम् परीय शिक्ष प्रत्य शिक्ष यहूर्य स्त्रिके के सम्बद्धा यस्त्राचित्रक्त्रिकेष् पर्हाणूर्या भेरे द्वेदि हर्ष्ट्रवैदेस नुने स्पर्ड सुरें यत्रणद्ध तमापार्श्वी वस्यप्रस्टित्ययान्त्र विभागमाशुक्रद्वदर्यम विष्ठियादशयदीस दिलायने रेगेर्स सुर्देश्या नेवाया विश्वितायुर्धे अर्थे दशहर्भायरीया |पंजियप्रविध्ययः मन्यापे| |सेर्वेद्वेद्वव्युद्युष्यूर् चुंबर्द्या हेण अरवार् कर्यर्ववयस्य । क्र-च्रेनइ-रूनइ-एइस<u>क</u>्ष ं दिविदेहें येशस्द्यस्तर्वा । रिवेदेवं व्येद्शुन्य ने मह्यव ष्प्रयोग् द्व त्यु द अविषु र न य अत्याप गरेरा क्रियस्टिकण्डायायायिरस्थिति र्ट्येवण्यावायायायायार्गरेथेवर्येवण्डेयकेर्प्यी 污彩 युवाधन्यस्य तह्वासुन्तन्त्र विष्ट्रेय पड़े इव हा करें हैं विष्ट्री वेद्देश्य विराधकेंद्रा

E

श्चियीदर्भार्य में विवस्त्र सुरायधीवा 100 । अदहरसद्विप्य अवास्या वार्रवंद्ध <u>बियायं न सर्वेदर्गे</u>डवी विक्रिंग "सेंग्रेस्ट्र इंड्डि वित्र द्वायत्यायां चित्र श्रुवेशेया विश्वाप अविषयं सक्षा विश्वाप र्द्ध ने ने ने ध्येदी नी हेर्याय द्वाई। श्चित्रप्रदेशय देशवास्त्र है। <u> क्रिन्द्यत् छैयाभूत्यस्य अहेत</u> र्ग्वविदेशें द्वरार्ड्ड्रिं येने राज्या यार्थम वेयवर्रिणंबहुनवीयर्ड्यायस्क्रियः घटा वयस् यभ्रमाय वर्षे वात्राय दक्षेत्र मेच-नवारा राज् 25.0

अर्देर वस्य राय

मुबावक्षयहूर्द्रुट्।

क्र्यानर्गात्र १८६६ म् येन्य भारता स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य

दर्भ "

र्जरक्रिय्यक्रद्वश्रद्दर्त्व्यक्रियेश्रद्भविद्यार्थेष्वेश्वरत्यवर्षात्रक्षात्रक्षात्र्वात्र्यद्व

विश्वश्वास्त्रे देन दृद्दर द्व-विवाधारा र युक्की।

न्यू रास्त्रीयार्वे वकारदेरसम्पर्ने द्वा

विद्यान प्राथ शृज्य स्वाध अध्याप

" जर्मक्षिके के विद्याय वा इर्र हर्ष वेषा वर्ष वस्ता वा में वर्ष

192

केंग्रेद्वयपर्वापत्वपद्वपद् あるるからいっというないからいなっていてい यश्वार्षेत्राप्त्या |र्गाव्यक्यायाश्चर्यायायायर्वर्यपर् र्ग्रयम्बाबर्ग्यस्यायः देवादकराणा यान्यम् रायस्य स्थान्य विष्युत्ति । यान्य विष्युत्ति । यान्य स्थान्य । म् द्रपत्रकेवर्गमह्द्रग्रेवद्र्यादेद्र्येवद्रिक्ष्यक्ष्य्यश्रुव्यवद्र्यक्ष्याव्यद्वय्य नम्बन्धक्यावव्यव्यक्षणम् न गर्वेश **१**६६ दे वे दे **ई**थेर्ड्ड्यू प्रमुख् विद्यहर्षे नहिं ग्रीनिहर बुगपगर्ग्यायस्य वर्षायस्य स्वासुन्य म्यु というないできるできることがあるという शिर्भे यक्ष ये प्रश्निम्प क्षेत्र यह क्षेत्र रं वर्ष स्पारा । প্রতিমধনী আইন ক্রিন্ট্রার क्रियोर्क्रवायाची र चीता वार्यर आर्क्रव र्द्यासर्भू भविष्टिरतास्त्रके यात्वास्त्रित्या न्यायस्त्र 1450 |त्वरच्चह्यकेव्रस्थनाया क्रेन्स्सरसङ्ग्रे

विर्देश्चित्राच्याच्याका । अक्ष्याक्र्यंतियवति । विर्वाचित्रवर्ष्ट्रियंत्रवाद्वा

ह्तार् प्रत्यवयक्ष्यायाय विवा

は、くてくいなとうが、というから

कुपल्डरन्डमचर्निका रज्जूनचिर्यत्र मुवनवर्रस्वराजना के वार्य स्वतंत्र के वार्य IACAA TON रिशरक्का श्रेक्टिक अकूर न मेंगा निवयत्व्य वर्गन दूर्य गायर साववेश सूनहाता में मूहीवाव मिस्सिस् विभरमायमेगार्कीमाविषविष्ट्रप्रस्थाया इंग्रुव्टव्र्व्यक्ष्व्यक्ष्व्यक्ष्व्यक्ष्वयद्वयद्वयद्वयय्वयः । व्यव्यव्यक्ष्ययः विष्याः विष्यः । विद्वयः विष्य विद्यान्य वार्श्वरात्यात्य विष्या विद्यार्गित्य विद्याय विद्याय विद्याय विद्याय विद्याय विद्याय विद्याय विद्या विकामभेगाव पार्वे रायके द्वे प्रचित्रं स्वापार परप्रामा र्राचि वर्षक केर्द्र महिन्द्रिक वर्षे वर्षिक केर्य के वर्षे विश्व किर्द्य देशयविश्व देवज्ञता नदेवरवान्वेवाशयळेंबाजीयळेंवा ।वानुद्रवहेंबहीययोद्याधीया 1यरेंद्रक्षण शर्दे अदस्त्र वायश ष्यान्त्रा विश्वरा तर्भयवविष्ठअवयायरद्रत्यमा स्ट्राचे भूवेचेवाचीवार्यायाये अस्र नेर्गद्धायार्चेर कुरद् । परवाचा बदा कें तासा शुरा सुदा क्षियाल कुर्वादेश र्याच्या स्था

ज्ञेताम् इसकार्यस्य द्यां यहिस्स्र हर्षाय स्वयं स्वयं वर्षाय स्वयं वर्षाय स्रस्य विकास स्थाय स विश्वेयत्र स्वास्त्र विश्वेष र्दवी विवास मार् द्वैतारा ते वे स्टाइस रामा केवा सिर्ठा र्वर विवेश के से सुन्द्र के स्टाइस विवास क्रियदेन्येव्यये यहा क्षेत्र के व्यवस्था 公公公 स्वर्षेत्रवात्रावययम् इ.म् वृद्ध्याया र्जित्के सैवासर्परियादेशस्याह्र सर्वाट्साता । दशस्य सेवासर् सेक्या सार्य देशस्य लेल्यान्त्री **र्वे**र्वक्ष्र्यस्य स्थापर् 1820/29/2018/2018 2484MK444124414 विरासुद्दर्धाण्यकेर्पदी केरवर्त ने देशहेंद्र के अवधिहैं। कित्वेशक्षेत्रां यावेर्वेद्धराया । व्यस्केवायय प्रविद्धिवायविद्यकेर्

अं रहर में देश हुई अधियमी वहा केंपज्ञन् गोर्नेच हुर्द्ध क्षेत्रेय प्रेयक्ट्रिश क्रिंगा स्ट्रा देव देव देव हैं की क्षेत्र प्रोत करें े ने स्या वे स्ट्रिंग व विरह्र के बरायके रेयही विकूर्वभर्वरहेगक्र्यशक्तिवर्च विभारः त्रात्रश्रास्त्राच्याच्या र्रपर्स्र्ज्यस्य सकर्त् हिन्द्रत्यद्रभस्य प्राप्तित्यरके। विस्वास्थ्यविवस्थित्यरेश हिवस्यत्ववर्षःश्वित्यरसेन्। विस्वस्थ्रस्य डिन्य यान ही श्राम्य प्रमान है। जिन्त्रें वास्त्रियदेश्यम् वस्त्रम् । जिन्त्येय्वेत्वित् केषा विस्त्रमः गर्मक्राम् सम्बद्धान्य स्त्रम् नेयवहूरी स्रामिक्टियान्य भन्ने श्ताः प्रेक्ट्रिया में बार् विक्रा में विक्रिया हैं। में में सिंग शिवर जाय के पर सिंग शिवर विक्रिया कि विक्र पर में प्राणिय कि में में सिंग शिवर के प्राणिय के प्राणि जिस्मान श्री सम्बद्धियान द्रा इन्ड उपविद्यानी धेनुस्था है जिलरमणेरकेशमवेद्रमदेशनरयाम्कर्। निर्द्रकेषयभेनित्वर्षेट्येनवी दिवास्त्रीत्वाम्य चर्त्याच्या व्याप्त

ष्ट्रभव रियावेदर्शिक्रमार्ख्या

|सर्शिवादययर्त्रयोशेरिवार्ट्रसायेट्य । नर्रेण पद्येषे विषया सुरा सुन पर्यादेन **3**5533555 नियमेशा मर्पार्ग्य पर् गुरुष्य नश्हें। क्रैं हैं हैं हैं समस्त्र हैं समस्त्र में स्वर्ध स्वर्य स्वर्य स्वर्ध स्वर्ध स्वर्ध स्वर्य स् ガニオエオニオニ য়ঽ৸ঽ৻৸ৠৢয়ঢ়ৢ৾ৼৣ৾৾ঢ় भ्रवस्मुखेरा दुँ इनेद्रश डेस'पारम्बन्धक्रीत्वसम्दर्भा । इस'पारम्बन्धक्रीत्वसम्दर्भा त्त्र देवार्ष्ट्र सम्यावन देवाया सेवाया सेवाया सेवाया है द्वा देवा विशेशतम देशका केटवरी हिर्णटिय देव कर बार्ट्स में यहर क्रिस वर्ण । भेन्स्रहर्षे। द्वैरहरेभेक्थन। निर्मानेह्राध्यम्येयेविद्येद्यं केते सुयावद्येद्वेद् कुँ धुर व्यव क्रवासर्ट्यमार्क्षम् स्वास्त्रक्रिया । विवास ब्रुट्ट्यिकेववयवापरे स्री 5 विद्वानेद्रकेष्ट्रेयार्थवारायहर्स्यवी विद्याद्रग्रम्याय्येद्राय्येवारावार्थेद्र्येत्वि । गिर्वर्ष्वरेश्रें वार्याना राष्ट्रवः। विदेश श्रेवंद्यादर्षेद्र साधिकायशायाँ दा श्रेम्बरुसमा

A

विद्वायम् श्रेरिनदेशे बिकेद्ये द्वाया दिन्ध्ने वाद्यात्म प्रमुद्धित द्वारा 1नव्य प्यायार रात्रात्र प्रमान्य विस्त 14,51,519 SIC A G 34 2 C 0 9 81 किवेके दशें छे ५ इस श्राप्त व्हेर्स्युव्य श्लेम्झेव व्यवस्ति। । अर्थर ज्ञेच स्वाहा वित्रप्रम्थ्या इत्युद्धा व्याद्दा निर्यक्षेत्रप्रकेश्वायंत्र |र्गरम्भूरम्थरपद्याक्षेत्रक्ष्य्रेर्ग र्रिटेय्स्निचाराह्यवेव विद्वास्यस्य विद्वेद्यद्रा विवाद्येर्भ्वपपरेक्ववस्य विवाद । वर्ष्णयत्स्रेवत्यश्चित्यस्य वित्र देशव ४५ तह ४ देव द्याया । खेंचाया येथे। हैं है। हेही |र्स्सर्यानमातः यो महस्सर्योदस्। 199 पार्चेव द्वेषयाने पारश्यारे पार्वा वार्षे स्थाय हेट पार प्रश्नुवा वा । वा श्रुवा पार्ट्व श्वा प्रद्वा द्वे ता मेशसिर्द्र वार्यह्वसावयवव्युप्ट्रियाशा 3 ार्वे अयम् येववाशस्य

के करणगणा

विश्वसम्ह्त्वस्रेद्यदेश्वदशर्वेद्धेद्रभावत्य। दिश्वस्यस्यस्य व्यापन्द्रेद्रम् श्वयवद्यायस्य । जाने कार दे अस्ति का किया अस्ति । अस् वितिर हैट के लूटेर्स बीच यरे बात हैंगा रिवर वर्धिक पूर्ट्स बीच यरे बात हैंगा । अहूर के वर्ष महिता के जा विवासम्बादिदर्भः श्वाद्यायर्गायर्थ्या । द्यायके वस्त्रद्वास्टर्ग ब्रियमायग्रीन्य वेद्रिय गुराय द्वाय श्रुला ।शबिद्द स्वाक्चिद्द्वाचित्तरवाज कुला वाप्तिन्नम्रित्व अक्ट्रिक्ट्रेवी अक्ट्रिश्वायर रिवन्त्रयशायवास्या शुहू स्वाफारायाद्व दिवंतिद्रश्रुवे दर्शस्य प्रयद्वाय स्वा क्षिण्य स्टिल्स्य स्टिल्स् ल्यानग्री मुस्मिन हेसपरसा गन्नम्यूनन्त्रहेसा नि विद्राहित्राधार्यक्षित्रभावेशसहर्ष्यक्षित्रम् विवाद् द्रियं विवादिश्या वार्यस्त्रित्रम् विवादार क्षेत्र क्षि. से विष्टे विष्टे के क्षेत्र के विष्टे के क्षेत्व श्वन व्याने हुँ चै-वृत्याचे हु अस वृत्य एक है हस्यानमञ्जू सार्योहेला

1705 |एर्डरेबेचक्केचक्दर्बर्सथ। |परफर्वेश मयायाक्य शराया सर्वपश्चेरस्तवोगानत्मसर्वेदप्राण्डे के में भाषामाने मारास्माने विश्वेत्रम्य सहेद पित्व वहव्यव्याव 424. अत्तात्तात्तात्त्राच्येत्वात्त्रेत्वात्त्र्वेत्वात्त्र्व्यात्त्र्वात्त्र्वात्त्र्वात्त्र्वात्त्र्वात्त्र्वात्त नुदेश र के अव्यक्ति स्वाद्यी नामाहै।

Image As Per Original Document

अभूमइन्ड्राण्ड्या इन्स् नेदबाद्यीसार्विस्यीत्राया देवहें वं या न्याया स्थापनाय स्थापना स केशल्यास्त्र्रित्वायर्वेभवार्त्युत्यस्थयक्ष्र्यत् केमस्यार्द्दिवें वेंद्रियमप्रकर्वे स्थितं वर्षार्वे क्षियइगय ४ईदित् विद्विण श्रेचित्रे स्थान । इन्कर्देने विवत्युद्यम् । अयर्डेस क्षुवासर व देश पटे देवे। रदमिवयोग यक्षेत्र यहित्वा क्रयः बर्केशवयाय न्यारेन्य्य शुरापदे देविव्येत्। मर्वाचेर्द्वेवसम्प्रत्येवसक्सावरवर् रिनेर्देरे छैस्यकें दमरें। जिलान्स्यायसम्बद्धाः ज्युन्तुन्तुन्ति निवस्तुनुदक्ष्वदेशयरत्युव" किंद्र गद्यवञ्चादत्वद्ययं पो | नर्दायभद्रेसकुत्यन कर् गुन्यके सर्भ। न्वेयवद्येषस्यसद्यम्भस्यस्य व गुन् श्चिर दिनश्चित्र या विषय के तर् विषय र्द्रहेत्हवयत्रशायकाद्गर्यस्ते ग (स्थिउ वस्तु व ।दवीवदर्धीयदस्यस्य स्वर्धस्य स्वर्

Best possible Image

विषयानर्यावय्यानक्ष्मान्त्र्यान्यस्थ 168 पर्वद्वद्वयम्ब्रुप्रम्तरुग निक्रद्य-नेश्यान्द्रद्यदी यदं रचय र त्यार राया स्वर्धे तकर 122144 क्षिर्वेश्वरवर्ग श्चियं दक्ष अञ्चारम्याचित्र इसद्यायम्। मिन्यक्रवानवान्यत्वस्य व्याद्यप्ति । |इंदेग्य 「おかれる」と呼んでは、まちしたが、なくれるない र्वा वर्ष अकुलय ते द्वार्य द्व जिस्रीयाजनम् अक्रिम्यायाचा 212/12 केल यहें दल देख से नश्रुवाल केंद्र साहे माळ र हुव हुं कारी **निरंग गुन्य अविश्व स्ट्याम त्या क्रावना** वाराध्य प्यरद्वाचयर्ग्यस्य स्थ किंग्यक्षेत्रस्य अर्चित राष्ट्र स्वेश

Whole Book As Per Original Document

क्रवाबर्धतान्त्रसम्बन्धतान्त्रसम्बन्धतान्त्रम् । स्वतान्त्रम् । स्वतान्त्रम् । स्वतान्त्रम् । स्वतान्त्रम् । स विश्व अर्द्य प्रस्तु श्रीरवद्दर ।बीक्रेंगरंगायसर्देशस्ट्रि श्चियरा पुर्दे पारिके र देवर खेव देवन र्श्यदर्स् क्यावर्र्ड्य के ब्रियम्य स्वर्षेत्री निर्भात्रात्र स्त्रेर्भाकाव वेदर्वीय प्रक्रेर्य निर्मे अवर विर्मा स्विधिक केर् ि पर्वेर इर र्वित्रेशन सम्प्रेस इस ... रिवित्विनक् रिके स्थिति दियरि देश रिके राम किर्केषिरकष्टश्चेत्रं दारीर दरस्य रचा उना यद्व श्राच्यायायायवार् श्रीयाचने अक्षेत्र वी वी वित्य द्वारि में द्वार के देव हो देव देव हो देव देव हो देव देव विवद्धरवग्रवनि रहे सुरहे वस्य है। र्हेर्ड्र स्थान्य स्थान्य स्थान्य विकार्स्तायदिन्दिक्षेत्वद्यविक्षा क्षियदेरवदेकेव स्याक्षेत्रे थे। विविध्यायविष्ठवयवे विवेधविद्या किक्षितिक किक्षिक कि 

विषयम् वर्षे देवारहेद्याचरावे स्वाप्यके वस्ता । अक्रवाके दर्भ सुवके वर्षे रसहेदसहेदस विविद्येद्विविद्वेच्चेयवस्य पदस्यवेष। हिर्वित्रेवेद्वेद्वविद्वविद्य। दिवस्य विद्यः विविद्येद्वेद्वेद्वेद्वेद्व केशसदर्द्धियवर्वे स्तुत्र्कुं हुराचर्वावह्या अर्वे देव सम्बद्ध आहुद्या ।

है जिग्रेग्न्य प्रेग्। इ. इ. इ	बिनुसारा सर्वा परी प्रस्था ।	 मार्ज् संग्रहांबलकुल्वकर्म्यत्वर्क्ष्र्वहर्म्यावाववद्वह्र्यव्यव्यव्यव्यक्ष्यक्ष्रिक्ष्रिक्ष्यक्ष्यक्ष्यक्ष्यक्ष्यक्ष्यक्ष्यक्ष्
हैं विजयवादाया		

## Please Visit TBRC.org to download the scan of the whole volume

## Surrogate LC Cataloging Record

Rgya chen bka' mdzod: the expanded edition of the writings of 'jam mgon ...

LC Control Number: None

Type of Material: Book (Print, Microform, Electronic, etc.)
Personal Name: Kon-sprul Blo-gros-mtha'-yas, 1813-1899.

Main Title: Rgya chen bka' mdzod: the expanded edition of the writings of

'jam mgon kon sprul blo gros mtha' yas

**Uniform Title:** [Works]

Published/Created: New Delhi: Shechen, 2002.

Description: 13 v.

Notes: Text in Tibetan

Subjects: Buddhism--China--Tibet.

LC Classification: BQ7564 +

**Dewey Class No.:** 

Geog. Area Code: a-cc-ti

CALL NUMBER: BQ7564+

**TBRC Scanning Information** 

Scanned by M/s Satluj Siti Enterprises, 63-F Sujan Singh Park, New Delhi, India, for the Tibetan Buddhist Resource Center, 115 5<sup>th</sup> Ave. 7<sup>th</sup> Floor, New York, NY 10003 USA 2003

ORIGINALLY PRINTED BY SHECHEN MONASTERY WITH THE SUPPORT OF TSADRA FOUNDATION